Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

‘पर्यावरण शिक्षा’

डॉ.गिरीश वी.वेलियत*

प्रस्तावना :

सृष्टि की अनुपम देन हमारा पर्यावरण है । मानव जीवन से पर्यावरण का अटूट नाता रहा है । “मानव पर्यावरण का प्रमुख घटक है, जो अपने कार्यों द्वारा इसे परिवर्तित करता है तथा स्वंय भी प्रभावित होता है ।” (पर्यावरण शिक्षण- रमा शर्मा, एम.के.मिश्रापृ .2) पर्यावरण के बीना मानव जीवन संभव ही नहीं है । भारतीय संस्कृति में प्रकृति को माँ कहा है और उसकी गोद में रहने वाले हम उसके बच्चे हैं । इस माँ ने अपने इन बच्चों को सबकुछ अर्पित कर दिया है । और उनकी संतान होने के नाते हमारा भी अपनी इस माँ के प्रति अर्पण होना चाहिए । भयंकर वन-विनाश, तीव्र आतायात, संसाधनों का अंधाधुंध प्रयोग, औद्योगिक प्रगति के नाम पर प्रकृति का दुरुपयोग, जनसंख्या वृद्धि आदि ने समग्र जीव सृष्टि को विनाश के मार्ग पर लाकर खडा कर दिया है । आज सारा विश्व इस बात से चिंतित है । और इसलिए आज ‘पर्यावरण शिक्षा’ अनिवार्य बन । गया है । इस संदर्भ में हरिश्चंद्र व्यास जी लिखते हैं “यह एक ऐसी शिक्षा है, जो मानव को जीने का सलीका सिखाता है । यह वह रास्ता बताती है जो मनुष्य को विकास यात्रा और प्रकृति के पारिस्थितिकी तंत्र के बीच में संतुलन और समन्वय का मार्ग है । यह आगे की पीढियों को जीवन की गारंटी देती है और प्रकृति के भूगोल तथा इतिहास के साथ-साथ रहना सिखाता है।”(www.prabhatbooks.com)

***पर्यावरण अर्थ व परिभाषा :**

पर्यावरण संस्कृत पुल्लिंग शब्द है । यह दो शब्दों के मेल से बना हुआ है ‘परि’ और ‘आवरण’ । ‘परि’ का अर्थ ‘चारों ओर तथा ‘आवरण’ शब्द का अर्थ’ ‘ढकनेवाला’ होता है । अंग्रेजी में इसके लिए ‘Environment’ शब्द है ।

निशांत कुमार के अनुसार “पर्यावरण मानव अथवा समस्त प्राणी जगत के चारों ओर फैला हुआ वह प्राकृतिक, जैविक तथा सामाजिक आवरण है, जिसमें मनुष्य तथा समस्त जीव रहते हैं । दूसरे शब्दों में, प्राणी मात्र को चारों ओर से घेरने वाली वे सभी परिस्थितियाँ चाहे

---

*डॉ.गिरीश वी.वेलियत,अध्यक्ष हिन्दी विभाग,मातुश्री मोंघीबा महिला आर्ट्स क़ॉलेज,अमरेली (गुजरात)

Saarth E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

भौतिक हो या अभौतिक पर्यावरण कहलाती है ।" ('पर्यावरण एवं समाज'- संपा.डॉ.आलोक कुमार गुप्त, डॉ.सुरेन्द्र पाल पृ. 17)

***शिक्षा :**

शिक्षा शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थों में होता है । इसके लिए अंग्रेजी में 'Education शब्द है ।

मानक हिन्दी कोश के अनुसार शिक्षा शब्द का अर्थ- विद्या पढाने या सिखाने की क्रिया, तालीम (एजुकेशन); उपदेश, नसीहत, एक वेदांग जिसमें वेदों के वर्णों, स्वरों, मात्राओं आदि का विवेचन (आरथोग्राफी); सबक, पाठ; परामर्श, सलाह होता है ।"(अशोक मानक विशाल हिन्दी कोश-संपा. डॉ.शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री पृ.649)

***पर्यावरण शिक्षा की परिभाषा :**

"पर्यावरण शिक्षा वह शिक्षा है जो लोगों में पर्यावरण के प्रति सही समझ, संवेदनशीलता तथा सकारात्मक द्दष्टिकोण का विकास करती है एवं पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरुकता उत्पन्न करती है ।" (पर्यावरण एवं समाज- संपा.आलोक कुमार कश्यप, डॉ.सुरेन्द्र पाल पृ.258) "पर्यावरण शिक्षा वह प्रक्रिया है जो पर्यावरण के बारे में हमें संचेतना, ज्ञान और समझ देती है । इसके बारे में अनुकूल द्दष्टिकोण का विकास करती है और संरक्षण और सुधार की दिशा में हमें प्रतिबद्ध करती है ।" (वही पृ. 258) "पर्यावरण शिक्षा वह शिक्षा है जिसके द्वारा बच्चों, युवकों और प्रौढों को प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और प्रकृति प्रदूषण के कारणों और उनके दुष्परिणामों से परिचित कराया जाता है और साथ ही उन्हें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और प्रकृति प्रदूषण की रोकथाम की विधियाँ बताई जाती है ।" (वही पृ.259)

***पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य :**

वर्तमान समय में अनेक सरकारी एवं गैरसरकारी संस्थाएँ और सामजिक संस्थाएँ है, जो पर्यावरण संरक्षण के प्रति सक्रिय रुप से जागृत है और लोगों को जागृत कर रही हैं । पर्यावरण शिक्षा की जडें 18वीं शताब्दी में पायी जाती है । जिन-जैक्स-रुसो ने सर्व प्रथम ऐसी शिक्षा के महत्व पर बल दिया । कई दशकों बाद लुईस अगजिस (स्विस प्रकृतिवादी) उन्होंने छात्रों को 'किताबों का नहीं प्रकृति का अध्ययन' करने के लिए प्रेरित किया । इन दोनों

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

विद्‌वानों ने पर्यावरण शिक्षा की सुद्दढ नींव डालने में सहायता की जो प्रकृति अध्ययन के नाम से जाना जाता है । (पर्यावरण शिक्षा, Wikipedia)

22, अप्रैल 1970 को प्रथम बार 'पृथ्वी दिवस' (अर्थ डे) मनाया गया । इसमें पर्यावरणीय समस्याओं के विषय में एक राष्ट्रीय शिक्षा ने आधुनिक पर्यावरण शिक्षा के लिए मार्ग प्रशस्त किया । 5 से 16 जून 1972 में स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र संघ की घोषणा हुई । तब से 5,जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' के रुप में मनाया जाता है । 1972 में स्टॉकहोम में पर्यावरण शिक्षा को अंर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली । (पर्यावरण शिक्षा, Wikipedia) सन्‌ 1977 में यूनेस्को के अंतर्राष्ट्रीय संमेलन में पर्यावरण शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देशय तय किए गये जो निम्नांकित हैं-

1. पर्यावरण की जागरुकता का विकास करना तथा पर्यावरण समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना ।
2. पर्यावरण के घटकों एवं समस्याओं के संबंध में ज्ञान तथा अनुभव प्रदान करना ।
3. पर्यावरण की समस्याओं, स्वरुप, प्रक्रियाओं का बोध कराना तथा पर्यावरण के घटकों का पारस्परिक निर्भरता का बोध कराना
4. पर्यावरण की समस्याओं के समाधान हेतु अपेक्षित कौशल तथा कार्य क्षमताओं का विकास करना ।
5. छात्रों को व्यावहारिक कार्यों हेतु अवसर प्रदान करना, सभी स्तरों पर सक्रिय भागीदारी को बढावा देना जिससे समस्याओं का समाधान किया जा सके । (वही पृ.220)

('पर्यावरण एवं समाज'-संपा.डॉ.आलोक कुमार गुप्त, डॉ.सुरेन्द्र पाल पृ.220/221)

***पर्यावरण शिक्षा की पद्धतियाँ :**

पर्यावरण शिक्षा देने की अनेक प्द्धतियाँ हैं । इनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं -

1. व्याख्यान पद्धति
2. वाद प्रतिवाद पद्धति
3. संगोष्ठियाँ व वर्कशोप पद्धति
4. संचार माध्यम पद्धति
5. नाट्‌य पद्धति

Saarth E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

इसके अलावा पर्यावरण शिक्षा संबंधी विभिन्न प्रकार के सूत्रों, बैनर, प्रदर्शन, विचार-विमर्श, विज्ञापन, स्पर्धाएँ आदि अनेक पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है ।

***पर्यावरण शिक्षा का पाठ्यक्रम** :

जिस प्रकार शिक्षा के स्तरों के अनुसार पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य निश्चित किए गये हैं उसी प्रकार उसका पाठ्यक्रम भी एन.सी.ई.आर.टी एवं विश्वविद्यालयों द्वारा तय किय गया है । आज प्रत्येक स्कूल-क़ॉलेजों में पर्यावरण की शिक्षा दी जाती है । इसके संबंध में पर्यावरण-पाठ्यक्रम की पुस्तकें भी प्रकाशित की गई है । पुस्तकों के अलावा छात्रों को प्रायोगिकी शिक्षा भी देने का प्रबंध किया गया है । पर्यावरण शिक्षा में चार्ट्स, मैप, ग्लोब संचार माधयमों प्रोजेक्टर, स्लाइ्स , सीडी, टी.वी , चलचित्र, प्रदर्शनी, विज्ञापन आदि श्रेष्ठ माध्यम है।

निष्कर्षत: पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण और संवर्द्धन का शिक्षण तो दिया ही जा रहा है । पर आवश्यकता इस बात की है कि देश का प्रत्येक नागरिक भी इस संबंध में अपना सहयोग दें । और यह आने वाली पीढी के लिए स्वच्छ पर्यावण की नींव के समान होगा ।

-: *<u>संदर्भ ग्रंथ सूची</u>* :-

1. पर्यावरण एवं प्रदूषण – घनश्याम सुखवाल संघी प्रकाशन जयपुर- 2002

2. पर्यावरण अध्ययन- दीप्ति शर्मा, महेन्द्र कुमार अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस नईदिल्ली-2012

3. पर्यावरण एवं समाज- डॉ. आलोक कुमार कश्यप, डॉ. सुरेन्द्र पाल अर्जुन- पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली-2012

4. पर्यावरण शिक्षण- रमा शर्मा, एम.के. मिश्रा अर्जुन-पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली-2012

5. अशोक मानक विशाल हिन्दी कोश-संपा. डॉ.शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री, अशोक प्रकाशन दिल्ली-6

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

-: *इंटरनेट माध्यम* :-

1. www.prabhatbooks.com
2. पर्यावरण शिक्षा, Wikipedia